जैन-दार्शनिकों का स्याद्वाद सिद्धांत का महत्व भी अनेकान्तवाद के समान ही हठवादिता का त्याग कर उदार बनने में निहित है। जैन-दर्शन अपने 'अहिंसा' के सिद्धांत के लिए प्रसिद्ध है। अतः 'स्याद्वाद'

Scanned with CamScanner

सिद्धांत एक प्रकार से 'मानस-अहिंसा' सिद्धांत है। क्योंकि स्याद्वाद सिद्धांत को अपनाकर जैन-दर्शन दूसरे अन्य दर्शनों के विचारों की सत्यता को भी स्वीकार करते हैं। 'स्याद्वाद' सिद्धांत तथा 'अनेकान्तवाद' सिद्धांत दोनों ही सिद्धांतों में एक ही हेतु रहा है, वह है- वस्तु की अनेकान्तकता। यही कारण रहा है कि कई स्थानों पर 'स्याद्वाद' को 'अनेकान्तवाद' सिद्धांत भी कह दिया जाता है। परंतु दोनों सिद्धांतों में अन्तर है। वह मुख्य अन्तर यह है कि 'अनेकान्तवाद' सिद्धांत जैन-दर्शन की तत्वमीमांसा की व्याख्या करता है जबकि 'स्याद्वाद' सिद्धांत ज्ञानमीमांसा की व्याख्या करता है। इस तरह से 'स्याद्वाद' जैन-दर्शन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

Scanned with CamScanner